Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 02, July-December 2021
http://swarsindhu-pratibha-spandan-org
© The Author(s) 2021
A UGC CARE listed Journal

किराना घराना के सुविख्यात महिला गायक कलाकार

SRISHTI NIRWAN

Research cholar, Department of Music and Dance, Kurukshetra University, Kurukshetra

शोध सार

पुरुष-प्रधान समाज में महिलाओं के लिए कोई भी कार्य करना इतना सरल एवं सहज नहीं है। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत परंपरा में ख्याल गायन शैली के प्रादुर्भाव के बाद हमें जितने भी कलाकार मध्यकालीन एवं आधुनिक काल के 20वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक देखने को मिलते हैं, ये सभी कलाकार पुरुष हैं। इसका कारण यह रहा होगा कि शिक्षा के अभाव एवं सामाजिक संरचना में जटिलता की वजह से महिलाओं के लिए कोई भी कार्य करना इतना सरल नहीं होगा। क्योंकि भारतीय संस्कृति पर कई बाह्य आक्रांताओं का अतिक्रमण हुआ, जिससे समाज में एक व्यापक बदलाव आया। जबकि प्राचीन काल में समाज में महिलाओं का उच्च स्थान था जो हमें वैदिक ग्रन्थों के अध्ययन से पता चलता है। किसी भी सामाजिक कार्य में उनका बराबर का योगदान होता था। हिन्दुस्तानी संगीत के शास्त्रीय पंरपरा को किराना घराना के कुछ सुविख्यात महिला कलाकार यथा हीराबाई, बड़ोदकर, रोशन आरा बेगम, गंगूबाई हंगल, प्रभा आत्रे आदि एक ऐसी पंरपरा का निवर्हन करते हुए दिखती हैं जो उनके कालखण्ड में सामान्य बात नहीं थी। इन कलाकारों ने न केवल संगीत की शास्त्रीय परंपरा को समृद्ध किया बल्कि महिलाओं को भी इस परंपरा को आगे बढ़ाने में प्रोत्साहित किया और यह प्रमाणित किया कि अगर दृढ़ संकल्प किसी भी कार्य को करने का लिया जाए, तो निश्चय ही पूर्ण किया जा सकता है। वास्तव में ये महिला कलाकार उस काल-खण्ड का प्रतिनिधित्व करती है जिस काल खण्ड में महिलाओं के लिये कोई साधाराण सा कार्य करना भी अत्यंत कठिन था। अतएव संगीत जैसे गंभीर और गहराई वाले विषय को लेकर भावी पीढ़ी के लिए अपना अमूल्य योगदान, इन कलाकारों का हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत को महत्त्वपूर्ण देन है। इन कलाकारों ने शास्त्रीय संगीत के लिए महिलाओं का मार्ग प्रशस्त किया है।

उद्देश्य- किराना घराना के सुविख्यात महिला गायक कलाकारों के सांगीतिक योगदान को जानन।

अनुसंधान विधि- प्रस्तुत शोध कार्य में सर्वेक्षणात्मक शोध पद्धति का प्रयोग किया गया है।

बीज शब्द: हीराबाई, गंगुबाई हंगल, रोशन आरा बेगम, सरस्वती बाई राने, प्रभा अत्रे।

भूमिका

संगीत जो शास्त्र पर आधारित होता है शास्त्रीय संगीत कहलाता है। शास्त्रीय संगीत की परंपरा अति प्राचीन है। धुरवा गान, जाति गायन, प्रबंध धुरपद-धमारा आदि के बाद ख्याल गायन का प्रचलन उत्तरार्द्ध मध्यकाल और पूर्वाद्ध आधुनिक काल के मध्य प्रचलन में आया। इस काल खण्ड में ख्याल गायन शैली के जितने भी कलाकार हैं सभी मुख्यतः पुरुष कलाकार ही हैं। परंतु पुरुषों की ही भाँति कुछ महिला कलाकारों ने ख्याल गायन शैली में अपनी अप्रतिम छाप छोड़कर शास्त्रीय संगीत में अपनी अलग पहचान बनाई। इन कलाकारों का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है -

हीराबाई बढ़ारेदकर

हीराबाई बढ़ारेदकर का जन्म महाराष्ट्र के मिरज में, 20 मई 1905 को हुआ था। बचपन से ही उनके कानों में अपने स्वनामधन्य पिता, उस्ताद अब्दुल करीम खाँ, की स्वर-लहरी गूंजा करती। अपनी मां ताराबाई से संगीत की प्रारंभिक शिक्षा लेने के बाद हीराबाई ने अपने बड़े भाई एवं श्रेष्ठ ठुमरी-गायक सुरेश बाबू माने से नियमित संगीत सीखना शुरू

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 02, July-December 2021
http://swarsindhu-pratibha-spandan-org
© The Author(s) 2021
A UGC CARE listed Journal

किया। अब्दुल करीम खाँ की गायकी के गहरे संस्कार हीराबाई पर बिल्कुल बचपन से होते आये थे। अब्दुल वहीद खाँ तथा अब्दुल करीम खाँ इन दो महापुरुषों की गायकी के संस्कार हीराबाई की संगीत साधना का महत्त्वपूर्ण मर्म है। हीराबाई की शिक्षा किराना घराने में हुई उन्हें किराना घराने की प्रतिनिधि गायिका माना जाता है।

उन्होंने रेडियो पर अपना पहला कार्यक्रम 1933 में दिया। उसी दौरान उनका पहला ग्रामोफोन रिकार्ड निकला। राग दुर्गा में उन्होंने गाया था 'सखी मोरी रुम झुम' और वह घर-घर में प्रसिद्ध हो गई थी। किराना घराना, राग विस्तार की पद्धतियों और ख्याल को विलंबित लय में प्रस्तुत करने के लिए प्रसिद्ध है। हीराबाई को प्रकृति की देन के रूप में बहुत महीन, मधुर और कोमल आवाज़ प्राप्त हुई। शुद्ध कल्याण, श्याम कल्याण, अहीर भैरव, शुद्ध सारंग, बसन्त बहार जैसे रागों को भी आपने गाया। तराना ठुमरी और हल्के मराठी पद गायन पर भी आपका पूर्ण अधिकार था।1 गणपति समारोह और कालियों में शास्त्रीय संगीत का कार्यक्रम प्रस्तुत करने वाली भी वह प्रथम महिला थी।

हीराबाई अपने बड़े भाई और माता के साथ नूतन संगीत विद्यालय चलाया करती थीं। इसी विद्यालय में उन्होने नाटक का भी एक विभाग खोला। उनके द्वारा अभिनीत नाटकों में 'सौभद्रा', 'साध्वी मीरा', 'संशय कल्लोल', 'पुण्य प्रभाव', 'प्रतिभा', और 'विद्याहरण' उल्लेखनीय है।

उन्होंने अपने भाई सुरेश बाबू माने और वायलिन-वादक पंडित विष्णु गोविंद जोग के साथ 1949 में पूर्वी अफ्रीका का दौरा किया और भारतीय संगीत का विदेशों में सम्मान बढ़ाया। 1953 में भेजे गए सांस्कृतिक मंडल में उन्होंने भारतीय संगीतज्ञों का प्रतिनिधित्व किया। उन्हें 1965 में संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार और 1970 में पद्मभूषण से सम्मानित किया गया। लता मंगेशकर ने 1989 में उन्हें दीनानाथ मंगेशकर स्मृति प्रतिष्ठान की ओर से इक्यावन हजार रूपये का पुरस्कार उनके घर जाकर दिया।

हीराबाई बड़ोदेकर पहली महिला थीं, जिन्हें देश की आजादी की पहली रात दिल्ली में 'वंदे मातरम' गाने का अवसर दिया गया।''हीराबाई ने केवल शास्त्रीय गायन में ही अपनी प्रतिष्ठा नहीं बढ़ाई बल्कि अपने सादा संयमित जीवन, उच्च विचार वाले आदर्श चरित्र में उन्होंने उस रूढ़िगत भ्रामक धारणा का खण्डन किया जो पेशेवर गायिकाओं के साथ प्रायः जुड़ी होती हैं।''[2]

गंगुबाई हंगल

गंगूबाई का जन्म 5 मार्च 1913 को धारवाड़ जिले के हंगल नामक स्थान में गंगामाता थानी मल्लाह परिवार में हुआ था। उन्होंने संगीत की प्रारंभिक शिक्षा अपनी मां से ली। उनकी मां ने उन्हें कर्नाटक संगीत सिखाया, जिसमें सरगम की भरमार होती थी। गंगूबाई ने बचपन में उस्ताद अब्दुल करीम खां, सवाई गंधर्व और हीराबाई बड़ोदेकर का गायन सुना था। सन् 1938 में जब सवाई गंधर्व हमेशा के लिए कुंडगोल में बस गए तो उन्होंने गंगूबाई को बाकायदा सिखाना शुरू किया। गंगूबाई रोजाना हुबली से कुंडगोल का तीस किलोमीटर का सफर टेªन से तय किया करतीं, सवाई गंधर्व से गाना सीखतीं और हुबली लौट आतीं। उन्होंने 1933 में पहली बार मुंबई में सांताक्रूज में एक संगीत-सर्किल में गाया। यहीं हिज मास्टर्स वायस वालों की नजर उन पर पड़ी और उनके ग्रामोफोन रिकार्ड बेचने शुरू किए। रेडियों पर उनका पहला कार्यक्रम 1936 में हुआ। देश में विभिन्न स्थानों में कार्यक्रम देने के अलावा, वह नेपाल, कनाडा, फ्रांस, अमरीका और जर्मनी में गायन प्रस्तुत किया। ''विदूषी गंगूबाई हंगल की गायिकी में बोल-आलाप के माध्यम से भावों की अभिव्यक्ति अत्यंत सुंदर ढंग से होती है।''[3]

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 02, July-December 2021
http://swarsindhu-pratibha-spandan-org
© The Author(s) 2021
A UGC CARE listed Journal

हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की वह पहली गायिका हैं, जिन्हें 1993 में तिरूपति में श्री त्यागराजा ट्रस्ट के वार्षिक संगीत-नृत्य समारोह में गाने का मौका मिला और 1995 में उन्हें 'सप्तगिरी संगीत विद्वानमणि' की उपाधि से सम्मानित किया गया। सन् 2002 में उन्हें भारत सरकार द्वारा 'पद्मविभूषण' से अलंकृत किया गया।4 उन्हें अब तक ढेरों पुरस्कार मिल चुके हैं, जिनमें 1971 में बेगम अख्तर पुरस्कार, 1978 में कर्नाटक विश्वविद्यालय से डाक्टर की मानद डिग्री, 1981 में कर्नाटक राज्य संगीत अकादमी पुरस्कार और 1984 में तानसेन सम्मान शामिल हैं। उन्हें 1990 में कर्नाटक विद्वान परिषद का सदस्य भी मनोनीत किया गया। उनके शिष्यों में जागनाथ वाडियार, अशांक नर्गेयर, सीता हीराबेट और सुलभा निरालगे प्रमुख हैं।

रोशन आरा बेगम

रोशन आरा का जन्म कानपुर में हुआ था। पिता थे अब्दुल इक खाँ, जो उस्ताद करीम खाँ साबह के छोटे भाई थे। रोशन प्रतिदिन आठ घंटे तक रियाज़ करती थीं। उस्ताद ने उन्हें जैसा और जो सिखाया समर्पित और योग्य शागिर्दा ने भी वैसा ही और वही आत्मसात् किया। सन् 1927 से आरंभ होकर यह तालीम सन् 1932 तक जारी रही।

रोशन आरा ने मुम्बई में जब पहली बार गायन प्रस्तुत किया तो श्रोताओं को ठीक से अनुमान हो गया कि भारतीय संगीत के क्षितिज पर एक ऐसी नई, गाने-तारिका का उदय हो गया है, जो रागों की रोशनी बिखेरती हुई अपना नाम सार्थक करेगी। सच ही साबित हुआ यह अनुमान। दिल्ली, पटना, कलकत्ता, हैदराबाद, बड़ौदा, इन्दौर, देवास और क्या लाहौर, क्या कराची। तात्पर्य यह है कि उन्होंने जहाँ भी अपना गायन पेश किया श्रोतागणों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

रोशन आरा के गायन की कुछ प्रमुख विशेषतायें इस प्रकार हैं - स्वरों की पुरसुकून बढ़त, राग के अनुकूल भाव, राग का महीन आकार और ताल की अद्भुत सटीकता। उनकी गाई जिन चीज़ों को बहुत अधिक शोहरत मिली और बार-बार सुनी गई उनमें राग ललित में गाई 'विदा भई रैन', राग मटियार में 'बसन्त के दिनु', मारुबिहाग में 'रसिया हो ना जा' और अड़ाना में 'मुंदरी मोरी काहें को' आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय रहीं। उनके सबसे पसंदीदा राग थे - बसन्त, केदार, शुद्ध कल्याण और शंकरा। इसके साथ ही वे तराना गाने में भी सिद्धहस्त थीं। उन्होंने एक पुरानी फिल्म 'जुगनू' में पाश्र्वगायन भी किया था। 1947 तक रोशआरा बेगम ने अपने आप को एक कलाकार के रूप में स्थापित कर लिया था तथा 15 दिसम्बर 192 को दुनिया को अलविदा कह गई।''[5]

सरस्वती बाई राने

सरस्वती बाई राने का जन्म 4 अक्टूबर सन् 1913 को मिरज में हुआ। सरस्वती राने की सांगीतिक शिक्षा उनके बड़े भाई सुरेश बाबू माने और बाद में उन्हीं की बड़ी बहन हीराबाई बड़ोदेकर के द्वारा हुआ। सन् 1933 में सरस्वती बाई ने आकाशवाणी के लिये गाना शुरू किया। एक टॉप ग्रेड आर्टिस्ट के रूप में ऑल इण्डिया रेडियो से 1990 तक कार्यक्रम दिया। बाद में आपने सार्वजनिक प्रदर्शन से सन्यास ले लिया। सरस्वती बाई और हीराबाई प्रथम जुगल गायिका के रूप में देश में लोकप्रिय हुई। 1965 से लेकर 1980 तक दोनों बहनों की जुगलबन्दी चलती रही। 1966 में महाराष्ट्र सरकार द्वारा बाल गंधर्व पुरस्कार, आई.टी.सी. संगीत रिसर्च एकेडमी अवार्ड- गुरु-महात्मय पुरस्कार एवं फैयाज अहमद खान मेमोरियल ट्रस्ट द्वारा किराना घराना अवार्ड 1999 में दिया गया। 19 अक्टूबर 2006 को मुम्बई में आपका देहावसान हो गया।[6]

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 02, July-December 2021
http://swarsindhu-pratibha-spandan-org
© The Author(s) 2021
A UGC CARE listed Journal

माणिक वर्मा

श्रीमती माणिक वर्मा स्वर-प्रधान संगीत में अधिक विश्वास करती है। बम्बई विश्वविद्यालय की स्नातक श्रीमती माणिक वर्मा का जन्म सन् 1256 में हुआ। उन्होंने श्री सुरेश बाबू माने और श्री जगन्नाथ बुआ पुरोहित से संगीत की शिक्षा प्राप्त की। किराना-घराने की गायकी की शिक्षा पाने के अलावा उन्होंने अन्य घरानों से कुछ अच्छे तत्त्व ग्रहण किए। फिल्म डिविजन में फिल्म-निर्देशक श्री अमर वर्मा की पत्नी श्रीमती माणिक वर्मा कुछ मराठी फिल्मों में पाश्र्व-गायन भी दे चुकी है। बंगला फिल्म 'वसंत-बहार' में भी उन्होंने पाश्र्व-गायन भी दे चुकी है। बंगला फिल्म 'वसंत-बहार' में भी उन्होंने पाश्र्व-गायन किया है। उन्हें पद्मश्री, लता मंगेश्कर पुरस्कार और महाराष्ट्र सरकार के पुरस्कार-सहित अनेक पुरस्कार मिले थे। उनका निधन 1996 में हुआ।[7]

प्रभा अत्रे

किराना घराने की सुरीली गायिका पूना निवासी प्रभा अत्रे जी का जन्म सितम्बर 1932 ई. में हुआ। प्रभा जी ने 13 वर्ष की उम्र में विजय करंदीकर से संगीत शिक्षा आरंभ की, जो पांच वर्ष तक जारी रही किन्तु वास्तविक शिक्षा सुरेश बाबू माने से मिली। लगभग 1947 से 1953 तक प्रभा अत्रे जी ने सुरेश बाबू माने से संगीत की शिक्षा ली। छः वर्ष की इस शिक्षा से ही ज्ञान मिला। छात्रवृत्ति के बल पर उन्होंने हीराबाई बड़ोदेकर से भी शिक्षा ग्रहण की।

डॉ॰ प्रभा जी की आवाज सुरीली व घुमावदार है। आप अपने गायन में सरगम का प्रयोग प्रचुर मात्रा में करती हैं और उसमें कल्पना की प्रतिमा की उड़ान पर्याप्त है। तानें दुरत और स्पष्ट होती है। आरोही-अवरोही ही सपाट तानें उनकी खासियत है। सीधी-सरल रचना वाली, कानों को मीठी प्रतीत होने वाली लालित्यपूर्ण गायकी है। प्रभा जी के गायन में बहुत आत्मविश्वास और उससे आने वाली सहज स्वाभाविकता है। डॉ॰ प्रभा अत्रे को विभिन्न अलंकरणों से सम्मानित किया गया है जिनमें कुछ प्रमुख रुप से इस प्रकार हैं -

- पद्मश्री, 1990
- संगीत नाटक अकादमी नेशनल अवार्ड, 1991
- पद्मभूषण, 2002
- लाईफ टाईम अचीवमेंट अवार्ड (पूणे यूनिवर्सिटी), 2002

आपने अनेक राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर संगीत का कार्यक्रम प्रस्तुत किया है। आप विदेशों में संगीत शिक्षण के लिये भी कई बार जा चुकी हैं। सन् 2010 से आपके नाम पर 'स्वरयोगिनी डॉ॰ प्रभा अत्रे शास्त्रीय संगीत पुरस्कार' प्रतिभावान् कलाकारों को दिया जाता है। वर्तमान में आप संगीत के कार्यक्रमों के अलावा संगीत शिक्षण का कार्य 'स्वरमयी गुरुकुल' पुणे में कर रही है। स्वरमयी गुरुकुल आपके द्वारा संचालित संस्था है।[8]

परिणाम

किराना घरानों की सुख्यिात महिला कलाकार यथा, हीराबाई बड़ोदकर, रोशनआरा बेगम, गंगूबाई हंगल, आदि महिला कलाकारों ने किराना घराने की गायकी एवं परंपरा को प्रसिद्ध एवं लोकप्रिय बनाया। अपने कठिन परिश्रम द्वारा शास्त्रीय संगीत की पंरपरा को समृद्ध तथा पीढ़ी दर पीढ़ी आगे पहुंचाने में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई, जो आगे आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणादायक रहेंगे।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 02, July-December 2021
http://swarsindhu-pratibha-spandan-org
© The Author(s) 2021
A UGC CARE listed Journal

निष्कर्ष

भारतीय समाज में प्राचीन काल में महिलाओं का स्थान उच्च एवं सम्मानित रहा है। इतिहास के प्राचीनतम स्रोत वैदिक काल के संगीत संबंधी ग्रंथ 'सामवेद' में वर्णित उपलब्ध तथ्यों से हमें ज्ञात होता है कि संगीत का समाज में उत्कृष्ट स्थान था और संगीत में विशेषकर, महिलाएं निपुण होती थी। मध्यकाल तक आते-आते महिलाओं की स्थिति वैसी नहीं थी। घराना परंपरा के उदय के बाद महिलाओं के लिये संगीत इतना सरल नहीं था। पुरुष की अपेक्षा महिलाओं को संगीत सीखने के लिये कई कठिनाईयों का सामना करना पड़ता था। इस समय के पुरुष प्रधान समाज में महिलाओं को एक अलग ही दृष्टिकोण से देखने का प्रचलन समाज में था। महिलाओं के लिये शिक्षा एवं इच्छायें पूर्ण करना इतना सरल नहीं था। ऐसे समय में कुछ किराना घराना के महिला कलाकारों ने ऐसा साहस और दृढ़ संकल्प दिखाया, जो आज की महिलाओं के लिये भी एक प्रेरणा का स्रोत बन गया है। किराना घराना के सुविख्यात महिला कलाकार यथा, हीराबाई बड़ोदकर, रोशनआरा बेगम, गंगू बाई हंगल आदि महिला कलाकारों ने शास्त्रीय संगीत की परंपरा को समृद्ध ही नहीं बल्कि नई पीढ़ी में इस परंपरा को पहुँचाने तक अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हुई दिखती है। इन महिला कलाकारों ने अपनी गायकी का असर पुरुष कलाकारों पर ऐसा बनाया कि पुरुष कलाकार भी इन महिला कलाकारों की गायकी का लोहा मानते हैं।

सन्दर्भ

1. चक्रवर्ती. कविता (2004). भारतीय संगीत को महान संगीतज्ञो की देन. राजस्थानी ग्रन्थागार (पृ॰61)
2. वही. (पृ॰59)
3. मिश्र. शम्भुनाथ (2002). हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत घराना परंपरा. प्रकाशन विभाग. भारत सरकार (पृ॰94)
4. पटवर्धन. सुधा (2002). पंडिता गंगूबाई हंगल. संगीत कला विहार (पृ॰67)
5. धर्मपाल (2008). किराना घराना की गायकी एवं बंदिशों का मूल्यांकन. ओमो पब्लिकेशन (पृ॰ 58)
6. गर्ग. लक्ष्मीनारायण (1969). हमारे संगीत रत्न. संगीत कार्यालय (पृ॰ 324)
7. www.prabhaatre.com